12

लक्ष्मी की पेंसिल

उषा शर्मा*

बच्चों में लिखने की चाहत तो होती ही है, लेकिन उस चाह को सार्थक अवसर और दिशा देनी की ज़रूरत होती है। बच्चे अकसर जो अनुभूत करते हैं उसे कागज़ पर उकेरने की कोशिश करते हैं। इसी प्रयास में वे कुछ-न-कुछ तो अभिव्यक्त करते ही हैं। उनकी अभिव्यक्ति को समझना, उसे सराहना और उस पर अपनी प्रतिक्रिया देना भी लेखन की चाह को बढ़ावा देता है। लेख प्राथमिक स्तर पर अलग-अलग उम्र के बच्चों के साथ हुए अनुभवों को समेटने का प्रयास है। बच्चों के लेखन की बानगी यह सोचने पर विवश करती है कि बच्चे कितना कुछ लिख सकते हैं और हम उन्हें क्या लिखने को देते हैं या उनकी लेखन क्षमता का कैसा अवमूल्यन करते हैं!

© NCERT not to be republished

इस लेख को आप तक पहुँचाने का सारा श्रेय लक्ष्मी को जाता है जिससे मेरी मुलाकात 7 जुलाई, 2013 को हुई थी। आप यह जानना चाह रहे होंगे कि आखिर यह लक्ष्मी है कौन? लक्ष्मी पहली क्लास में पढ़ती थी, जब मैंने दिल्ली के एक सरकारी स्कूल की पहली क्लास को तीन महीने पढ़ाया। मैंने क्या पढ़ाया, बच्चों ने मुझे बहुत कुछ 'पढ़ाया'। यह सरकारी स्कूल ग्रामीण क्षेत्र में है जहाँ वे बच्चे पढ़ने आते हैं जिनके पिता या तो सब्ज़ी बेचते हैं, मज़दूरी करते हैं या किसी दुकान पर काम करते हैं और माता दूसरों के घरों में झाड़ू-पोंछे का काम करती हैं, मज़दूरी करती हैं या सिलाई का काम करती हैं। यह सच्चाई है कि मैंने नहीं बल्कि पहली क्लास के उन बच्चों ने मुझे बहुत कुछ सिखाया है जिसके लिए मैं हमेशा उनकी कर्ज़दार रहूँगी। तो आपका अगला सवाल यह होगा कि फिर 'लक्ष्मी' ही क्यों? दरअसल लक्ष्मी की बहुत सारी बातों ने मुझे बहुत *फैसीनेट* किया। सबसे पहले बात करते हैं उसकी पेंसिल के बारे में! लक्ष्मी के पास एक बहुत ही छोटी पेंसिल हुआ करती थी जिससे वह लिखती थी। आप खुद ही उसकी पेंसिल का साइज़ देख लीजिए। उसकी वह पेंसिल मेरे पास आज भी

लक्ष्मी

* *प्रोफ़ेसर*, प्रारंभिक शिक्षा विभाग, रा.शै.अ.प्र.प., नयी दिल्ली

लक्ष्मी की पेंसिल

है और आप इसी बात से अंदाज़ा लगा सकते हैं कि उसकी छोटी-सी पेंसिल ने किस तरह से मेरा मन मोह लिया था। बहुत हैरानी की बात है कि एक छह-सात साल का एक बच्चा इतनी छोटी पेंसिल से लिखने का काम करे जबकि उसकी अंगुलियाँ उस पेंसिल से बड़ी थीं। बहुत सारे बच्चे ऐसे होते हैं जिन्हें घर के हालातों के कारण बहुत सारे समझौते करने पड़ते हैं। लिखने के लिए एक अच्छी पेंसिल तो हर बच्चे का अधिकार है, वह तो उसे मिलनी ही चाहिए, लेकिन लक्ष्मी जैसे बहुत सारे बच्चों के पास यह सुविधा भी नहीं होती। फिर भी वे पढ़ने-लिखने में अपनी पूरी 'जान' लगा देते हैं। कोई और बच्चा होता तो कहता कि मैं तब पढ़ूँगा या पढ़ूँगी जब मुझे नयी वाली पेंसिल लाकर दोगे, लेकिन लक्ष्मी ने ऐसी शर्त कभी नहीं रखी होगी! मुझे इस बात का पूरा अंदाज़ा है कि उसे लिखते समय पेंसिल को सँभालने में कितनी तकलीफ होती होगी! लक्ष्मी की इस बात ने मुझे यह सिखाया कि अगर पढ़ने-लिखने का मन हो तो कोई चीज़ आपका रास्ता नहीं रोक सकती। यानी आप अभावों में भी बेहतर पढ़ाई-लिखाई कर सकते हैं।

लक्ष्मी की एक और खास बात थी— उसका झट से जवाब देना। सवालों के जवाब नहीं, बल्कि मेरी या अपनी क्लास के बाकी बच्चों की कही हुई बातों के बदले वह जो जवाब देती थी, वे सुनने वाले होते थे। इसी क्लास में एक बच्ची थी— इकरा। वह रोज़ स्टील के टिफ़िन में खाना लाती थी, हालाँकि स्कूल से मिड-डे-मील यानी दोपहर का भोजन मिलता था! इकरा को अपना टिफ़िन खोलने में दिक्कत होती थी इसलिए वह अकसर अपना टिफ़िन मुझसे खुलवाती थी। क्लास के बाकी बच्चे भी पीछे क्यों रहें! वे अपनी-अपनी बोतल मुझसे खुलवाने लग गए। ऐसा बच्चों में अकसर होता है कि अगर क्लास का कोई एक बच्चा टीचर से कोई काम करवाए तो बाकी बच्चे भी वही या उस जैसा काम लेकर आ जाते हैं। इतना ही नहीं, अगर कोई बच्चा नया टिफ़िन बॉक्स या बोतल लाता है तो उस दिन उस बच्चे को प्यास और भूख बहुत जल्दी और बार-बार लगेगी! उसे टीचर को अपना नया टिफ़िन बॉक्स या बोतल जो दिखानी है। खैर, हम वापस इकरा पर आते हैं। जब इकरा हर बार की तरह मेरे पास अपना टिफ़िन बॉक्स खुलवाने आई तो लक्ष्मी ने झट से कहा—''मैडम क्या तुम्हारी नौकरानी लगी हैं? जो आ जाते हो अपना टिफ़िन और बॉटल खुलवाने!'' मैंने उस समय तो लक्ष्मी को टोक दिया कि इसमें 'नौकरानी' वाली बात कैसे आ गई? आप भी तो काम करते हैं न! इसमें क्या हुआ? पता नहीं लक्ष्मी को मेरी बात समझ आई या नहीं, लेकिन मुझे यह समझ आ गया कि बच्चों के मन में हमने डबल स्टैंडर्ड्स या दोहरे मापदंड डाल दिए हैं। बच्चे मैडम का काम करें तो वे 'नौकर' नहीं, लेकिन अगर

© NCERT not to be republished

मैडम बच्चों का काम कर दें तो वे 'नौकर/नौकरानी' बन जाती हैं। ऐसा क्यों? लक्ष्मी की इस बात ने मुझे यह अच्छे से समझा दिया कि अभी हिंदी, गणित के अलावा बहुत कुछ है जिसे बच्चों ने सीखना है, *लर्न* करना है। लेकिन उससे पहले बहुत कुछ है जिसे *अनलर्न* करना ज़रूरी है, जैसे 'नौकरानी' वाली बात! एक दिन और भी गज़ब का किस्सा हुआ! जैसे कि मैंने बताया था कि बच्चों को स्कूल में दोपहर का भोजन मिलता था। जैसे ही आधी छुट्टी होती तो मैं आदत के अनुसार सभी बच्चों से खाना लेने को कहती। बच्चे अपने-अपने टिफ़िन बॉक्स लेकर क्लास के बाहर लाइन बनाकर खड़े हो जाते और खाना लेकर फिर क्लास में आ जाते। तो एक दिन जब मैंने खाना लेने के लिए कहा तो लक्ष्मी तपाक से ताना मारने वाले अंदाज़ में बोल पड़ी—"खुद तो खाती नहीं हैं, हमसे कहती हैं कि खाना खा लो।" यह सुनकर मैं मुस्करा भर दी।

लेकिन यकीन मानिए मन-ही-मन मैं बहुत ज़ोर से हँस रही थी। मेरी हँसी रोके नहीं रुक रही थी! उसकी बात तो ठीक थी! खैर अगले दिन से मैं भी स्कूल में खाना लेकर जाने लगी और बच्चों के साथ बैठकर खाने लगी! यह मेरे लिए बहुत प्यारा अनुभव था— बच्चों का साथ होना, बच्चों के साथ हँसते-गपियाते खाना खाना! खाना खाने का ऐसा आनंद मुझे घर पर खाना खाने में कभी नहीं मिला! बच्चे होते ही हैं ऐसे!

लक्ष्मी की एक और बात आपसे कहने का बहुत मन है! यह बात शायद आपके दिल को भी छू जाए! एक दिन लक्ष्मी खाना नहीं लाई। मैंने कई बार कहा—"लक्ष्मी, आज स्कूल वाला ही खाना खा लो!" लेकिन लक्ष्मी टस से मस नहीं हुई और अजीब-सी

ज्योति

आँखों से मुझे देखती रही! मैंने उसे सेब भी दिया, उसने वह भी नहीं खाया, मना कर दिया! थोड़ी देर बाद लक्ष्मी की दोस्त ज्योति मेरे पास आई और मेरे कान में हलके से कहने लगी—"आज लक्ष्मी की मम्मी ने खाना नहीं बनाया इसलिए उसने खाना नहीं खाया।" "क्यों?"—मैंने जानना चाहा। "कल रात लक्ष्मी के पापा ने लक्ष्मी की मम्मी को मारा था, वो शराब पीते हैं न, तो लक्ष्मी की मम्मी ने सुबह खाना नहीं बनाया।" मुझसे कुछ कहते न बना— न तो लक्ष्मी से न ही उसकी मम्मी से जो पूरी छुट्टी होने पर उसे लेने लाई थीं। उफ़, बच्चे इतनी छोटी उम्र में कितना कुछ झेलते हैं! और अब बात वापस लक्ष्मी की पेंसिल की! लक्ष्मी की सबसे खास बात यह है कि उसे झोपड़ी बनाना बहुत पसंद है। आप कहेंगे कि इसमें खास क्या है? सभी बच्चे झोपड़ी बनाते हैं। लेकिन अगर मैं कहूँ कि आप मेरी तस्वीर बनाइए, अपने दोस्त की तस्वीर बनाइए तो आप क्या बनाएँगे? ज़ाहिर सी बात है कि आप मेरी और अपने दोस्त की तस्वीर बनाएँगे। लेकिन अगर आप की जगह लक्ष्मी होगी तो वह ऐसा नहीं करेगी। वह सबसे पहले झोपड़ी बनाएगी, फिर मेरी या अपने

© NCERT not to be republished

दोस्त की तस्वीर बनाएगी! अब आपको पता चल गया होगा कि मैं क्यों लक्ष्मी की झोपड़ी बनाने को खास कह रही थी! उसकी इस खास आदत का पता तब चला जब एक दिन मैं बच्चों के साथ उनके परिवार के बारे में बात कर रही थी। मैंने सभी से अपने परिवार के लोगों की तस्वीर बनाने के लिए कहा। सभी बच्चों ने कुछ-न-कुछ बनाया! लेकिन लक्ष्मी ने अपनी आदत के अनुसार सबसे पहले झोपड़ी बनाई और फिर परिवार के बाकी सदस्य!

एक दिन की बात और है। मैंने हिंदी की किताब में दिए गए रसोईघर के बारे में बच्चों से बात की। उनकी रसोई में क्या-क्या सामान है? कौन-कौन क्या-क्या बनाता है? रसोई में और कौन-कौन रहता है? आदि। सबने अपनी-अपनी रसोई के बारे में अपनी बात कही और फिर मैंने उनसे अपना-अपना रसोईघर बनाने के लिए कहा। सोचिए, लक्ष्मी क्या बना रही होगी? झोपड़ी! मैंने लक्ष्मी से कहा— ''लक्ष्मी, झोपड़ी नहीं बनानी है, अपना रसोईघर बनाओ। उसमें क्या-क्या है, वह बनाओ। लक्ष्मी का जवाब था—''मैडम बना तो रही हूँ।'' ''कहाँ बना रही हो लक्ष्मी? तुम तो फिर से झोपड़ी ही बना रही हो।''—मैंने कहा। ''मैडम, झोपड़ी के अंदर प्लेट, कटोरी, गिलास बनाऊँगी न!''—लक्ष्मी ने समझाने वाले अंदाज़ में कहा! मैंने कुछ नहीं कहा और मैं बाकी बच्चों का काम देखने आगे बढ़ गई।

लक्ष्मी की रसोई

एक और दिन की एक और बात! पहली क्लास की टीचर दीपा मैडम का प्रोमोशन हो गया और वे अक्तूबर के पहले हफ़्ते में स्कूल छोड़कर दूसरे बड़े बच्चों के स्कूल में चली गईं। उनके जाने के कुछ दिन बाद मैंने सब बच्चों से कहा—''मुझे दीपा मैडम की बहुत याद आ रही है। उनके बिना क्लास में कुछ मज़ा नहीं आ रहा। क्या तुम्हें भी दीपा मैडम की याद आ रही है?'' ''हाँ, हमें भी दीपा मैडम की याद आ रही है।''—सब एक साथ बोल पड़े। ''तो क्यों न उन्हें चिट्ठी लिखें?''—मैंने सुझाव दिया तो सबने मान लिया और सभी बच्चों ने अपने-अपने तरीके से दीपा मैडम को चिट्ठी लिखी। जानते हैं लक्ष्मी ने चिट्ठी कैसे लिखी? कुछ ऐसी! लक्ष्मी ने चिट्ठी में फिर से झोपड़ी बनाई और फिर दीपा मैडम की तस्वीर!

क्लास के बाकी बच्चों ने भी अपने-अपने तरीके से दीपा मैडम को चिट्ठी लिखी। हाँ, तस्वीर हर बच्चे ने बनाई। हर बच्चे ने अलग तरीके से अपने मन की बात कही। कुछ ने पंक्तियाँ लिखीं तो कुछ ने शब्द तो कुछ ने केवल तस्वीर बनाकर दीपा मैडम का नाम लिखा। बच्चों की इन चिट्ठियों में बच्चों का पूरा संसार देखा जा सकता है कि वे किसे कितना प्यार करते हैं। किसी के न होने पर वे कितना खालीपन महसूस करते हैं। और भी न जाने क्या-क्या, जिसे आप केवल महसूस कर सकते हैं, उसके बारे में बताने के लिए आपको शब्द ही नहीं मिलते।

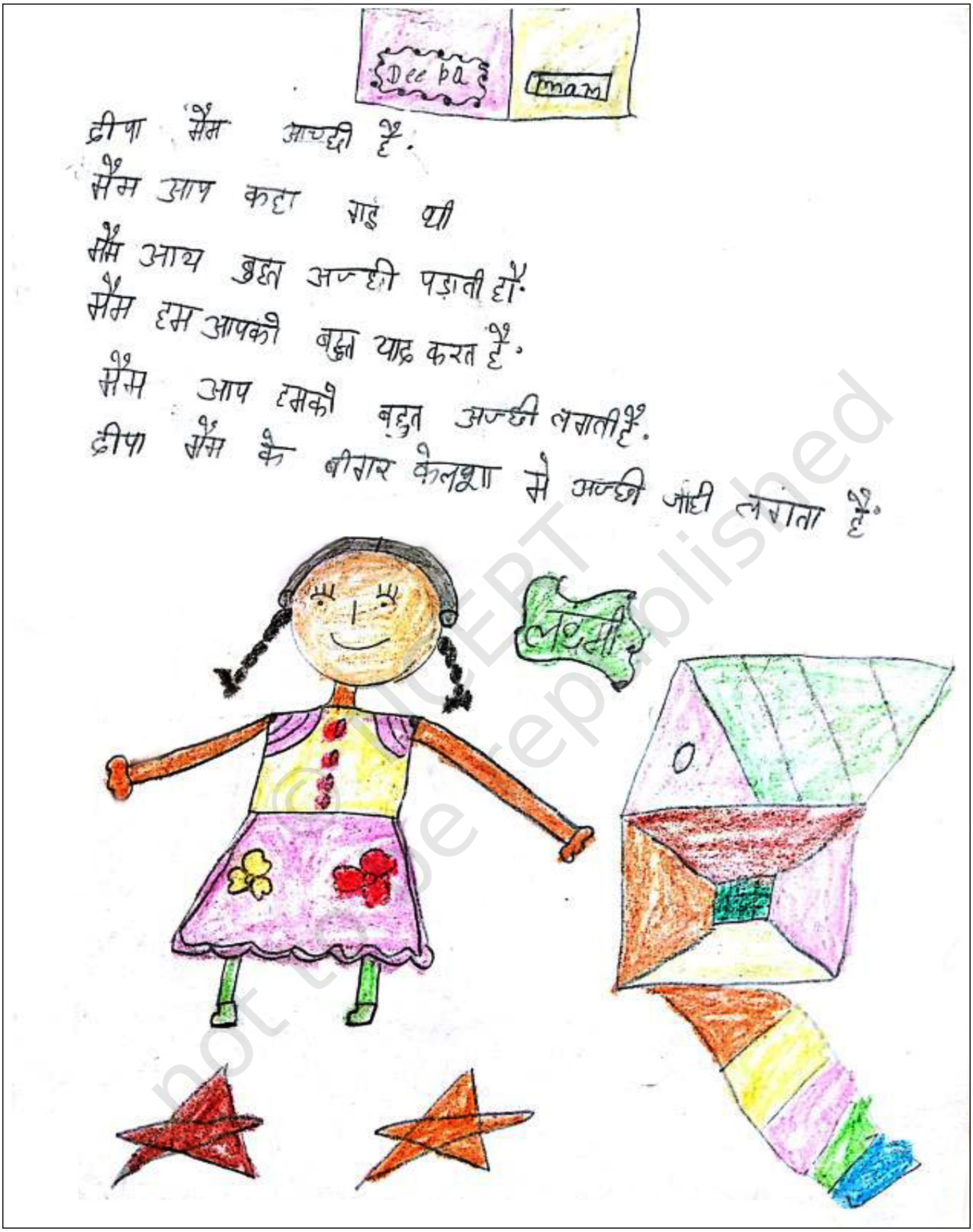

© NCERT
not to be republished

लक्ष्मी ने लिखी चिट्ठी

बच्चों ने लिखी चिट्ठियाँ

© NCERT not to be republished

बच्चों के लेखन पर गौर करें तो पाएँगे कि अपने मन को लिखने की कोशिश की है। हाँ, यह अलग बात है कि उन्होंने लिखने के लिए अपनी वर्तनी का प्रयोग किया है। कुछ बच्चे अभी शब्द के स्तर पर हैं, जैसे— 'करनठ, टजी, अचछ'। लेकिन कुछ बच्चे पूरे वाक्य में अपनी बात कहना चाहते हैं। भाव प्रधान अभिव्यक्ति के लिए वे ऐसे वाक्य भी प्रयोग करते हैं जो एक वयस्क की भाषा अधिक प्रतीत होती है, जैसे—'आपके बिना कितना खाली-सा लगता है।/ आपको नहीं पता कि हम आपके बिना कैसे रहते हैं!/आप कहाँ चली गई हैं?/ आप हमसे बहुत दूर चली गई हैं।' यह उदाहरण इस ओर संकेत करता है कि बच्चे अपने मन की बात करना और कहना चाहते हैं। लिखित अभिव्यक्ति में विचार अधिक महत्वपूर्ण होता है, जिसमें शब्दों का चयन, शब्दों का क्रम, व्यंजना आदि शामिल हैं। एक बच्ची केवल दीपा मैडम का नाम—'दीपा मैम' ही लिख पाई जो कि ब्लैकबोर्ड पर लिखा गया था और बच्ची ने उसे देखकर अपनी कॉपी में लिखा।

ऐसा नहीं है कि लक्ष्मी को सिर्फ़ झोपड़ी ही बनाना आता था। वह और भी बहुत कुछ बनाती है। यह भी होता है कि बच्चे जिस चीज़ को पसंद करते हैं, जिसे वे बार-बार कहीं-न-कहीं देखते हैं— अकसर वही बनाते हैं, उसके बारे में बात करते हैं, उसके बारे में लिखते हैं। धीरे-धीरे उनके इन सब कामों में बदलाव आता जाता है, यानी एक बार झोपड़ी जिस तरीके से बनी थी कुछ समय बाद उस झोपड़ी में और सफ़ाई आती चली जाएगी। लक्ष्मी की झोपड़ी में भी लगातार बदलाव आता गया। बच्चों की ड्राइंग से, उनके लिखने से उनके मन के बारे में भी पता चलता है। बच्चे अपने आस-पास तो देखते हैं, उसके बारे में बहुत कुछ सोचते हैं, महसूस करते हैं और जब मौका मिले तो उसके बारे में बात करते हैं या अपने मन को किसी-न-किसी तरह व्यक्त करते हैं। लक्ष्मी के साथ-साथ मैं दो और बच्चों की बात बताती हूँ।

अहाना उर्फ़ बिंदी को बचपन से ही लिखने का बहुत शौक है (हालाँकि वह अभी भी बच्ची ही है और तीसरी कक्षा में पढ़ती है।) उसकी एक और खास बात यह है कि पेन, पेंसिल और डायरी या नोटबुक खरीदने से उसका मन ही नहीं भरता। जब भी उससे मिलना होता तो उसके हाथ में पेन या पेंसिल होती और वह कागज़ की तलाश में होती। अहाना का यह लिखने का शौक उसके लेखन में नज़र भी आता है। वह सिर्फ़ लिखती ही नहीं है बल्कि लिखने को अपनी जिंदगी में अलग-अलग कामों के लिए इस्तेमाल भी करती है। अहाना जब लिखती है तो उसमें पूरी तरह डूब जाती है। उसके शब्दों का चुनाव बहुत अलग-सा होता है और ऐसा इसलिए होता है, क्योंकि

अहाना उर्फ़ बिंदी

अहाना का लेखन

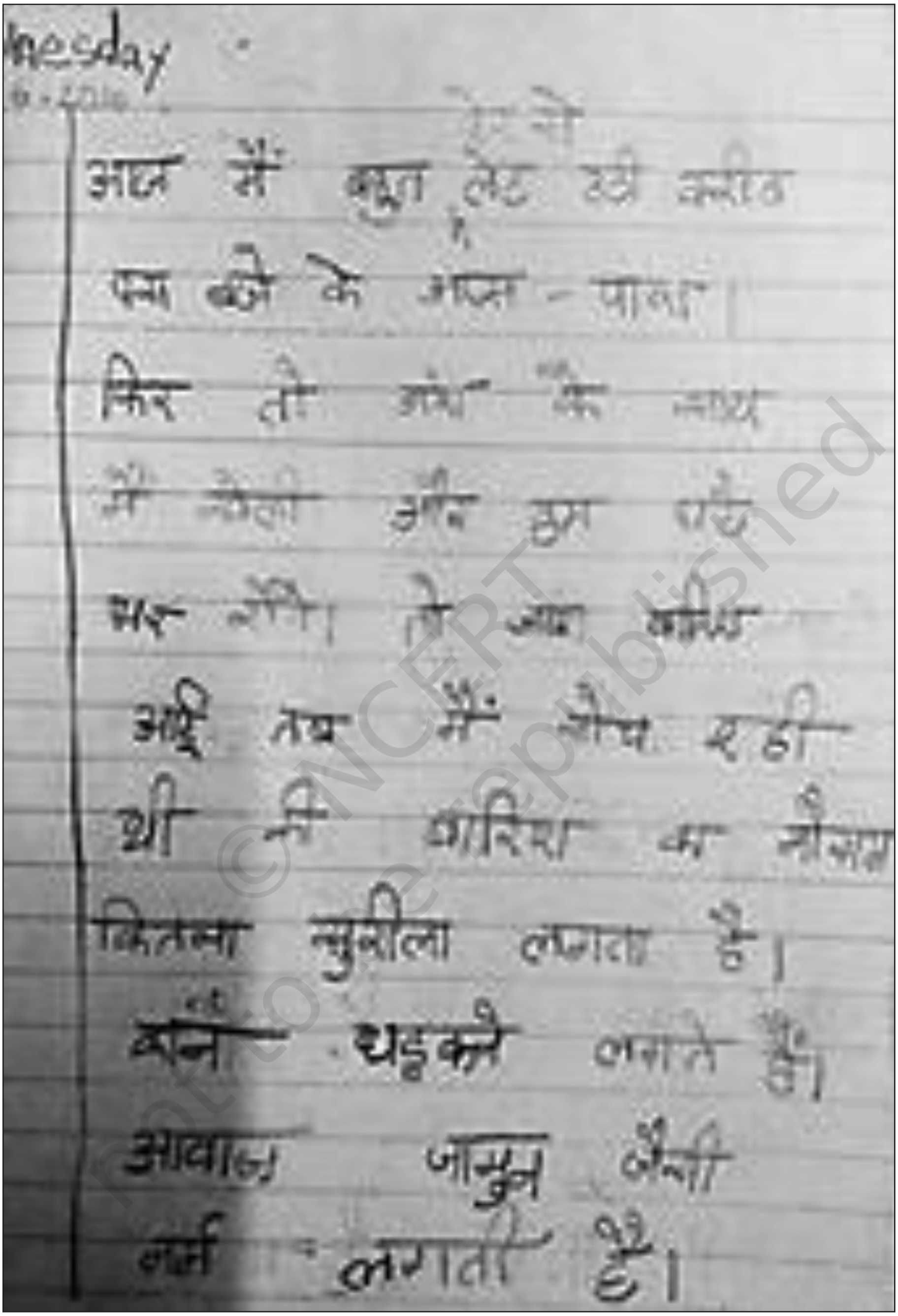

©NCERT not to be republished

अहाना का लेखन

वह सोचती ही अलग तरीके से है। पहली बात तो तीसरी क्लास का बच्चा अपने उठने के बारे में लिखेगा नहीं और वह भी लेट उठने के बारे में। 'आज मैं बहुत लेट उठी, करीब दस बजे के आस-पास।' अहाना की इस पहली पंक्ति को पढ़ने के बाद यह सहज ही कहा जा सकता है कि वह वैसा ही लिखती है जैसा वह सोचती है या जैसा उसे कहना होता है।

'कहीं कोई दुराव-छिपाव नहीं।' पहले वाक्य में 'देरी से' को जोड़ना यह बताता है कि उसके पास भाषा की वैकल्पिक व्यवस्था भी है लेकिन जब वह लिखना शुरू करती है तो उसके प्रवाह में 'संशोधन' के बाधक तत्व को शामिल होने का मौका नहीं देती। बच्चों के लेखन के संदर्भ में यह बात बहुत पते की है कि लिखते समय पूरा ध्यान लेखन पर होता है जो एक तरह से विचारों की अभिव्यक्ति है, विचारों का प्रवाह है या फिर चिंतन-प्रक्रिया है। लेखन के संदर्भ में यह बात बहुत मायने रखती है कि हम जैसा सोचते चले जाएँ, वैसा लिखते भी चले जाएँ। इससे हमारे सोचने के तरीके और सोचने के स्तर के बारे में भी साफ़-साफ़ जानकारी मिलती है। 'फिर तो मैं अंश के साथ खेली और हम घंटे भर खेले।' यह वाक्य भी बेहद खास है जिसमें यह स्वर सुनाई देता है कि देर से उठने के बाद तुरंत खेलना ज़रूरी था, वह भी समय गँवाए बिना। आमतौर पर बच्चे बारिश को देखकर यही कहते हुए नज़र आएँगे कि 'कितनी बारिश हो रही है, सब तरफ पानी भर गया। चलो, कागज़ की नाव बनाकर तैराते हैं।' लेकिन अहाना ने कुछ इस तरह लिखा! ''बारिश का मौसम कितना सुरीला लगता है। कान धड़कने लगते हैं। आवाज़ जामुन जैसी नर्म लगती है।'' बारिश का ऐसा वर्णन मेरी कल्पना से भी परे है। बारिश का ऐसा वर्णन न तो कभी पढ़ा और न ही कभी सुना। ऐसा 'रूपक' किसी भी कविता के काव्य सौंदर्य को द्विगुणित कर देता है। अगर आप गौर करें तो अहाना के द्वारा इस्तेमाल किए गए 'सुरीला'/ धड़कने/आवाज़/ नर्म' शब्द (वाक्य भी) अहाना के संगीत से नज़दीकी संबंध के बारे में भी 'गुपचुप' बता जाते हैं। इसका एक निहितार्थ यह है कि बच्चे जिन चीज़ों में 'शामिल' होते हैं उससे जुड़े शब्द उनकी कल्पना और कल्पना भरी अभिव्यक्ति में सहजता से प्रकट हो जाते हैं। वास्तव में बारिश के मौसम का 'सुरीला' होना, कान का 'धड़कना'और आवाज़ का 'जामुन-सा नर्म' होना —अद्भुत कल्पना है और यह कल्पना करना किसी भी स्कूल में नहीं सिखाया जाता है। अगर शाला कल्पना की ऐसी उड़ान को पोषित करे तो वह बहुत बड़ी मदद होगी बच्चों की!

अहाना ने अपनी मौसी को भी एक चिट्ठी लिखी। वैसे मैं बता दूँ कि अहाना को चिट्ठी लिखना बहुत पसंद है। तो चिट्ठी कुछ इस तरह थी। इस चिट्ठी में अहाना ने वैसा ही लिखा, जो उसके मन में जैसे-जैसे आया या जैसा वह अपनी मौसी को 'महसूस' करती है, अपनी मौसी के बारे में सोचती है। इस चिट्ठी में आप क्या देखेंगे? मन की बात या यह कि शब्द कैसे लिखें हैं यानी उसकी वर्तनी/स्पैलिंग? बिलकुल सही— मन की बात! हम क्या कहना चाहते हैं, यह अधिक महत्वपूर्ण है। वर्तनी या स्पैलिंग तो बच्चे धीरे-धीरे सीख ही जाएँगे और यकीन मानिए सीख जाते हैं। ठीक वैसे ही जैसे हम बोलते-बोलते बोलना सीख जाते हैं, वैसे ही हम लिखते-लिखते लिखना

© NCERT not to be republished

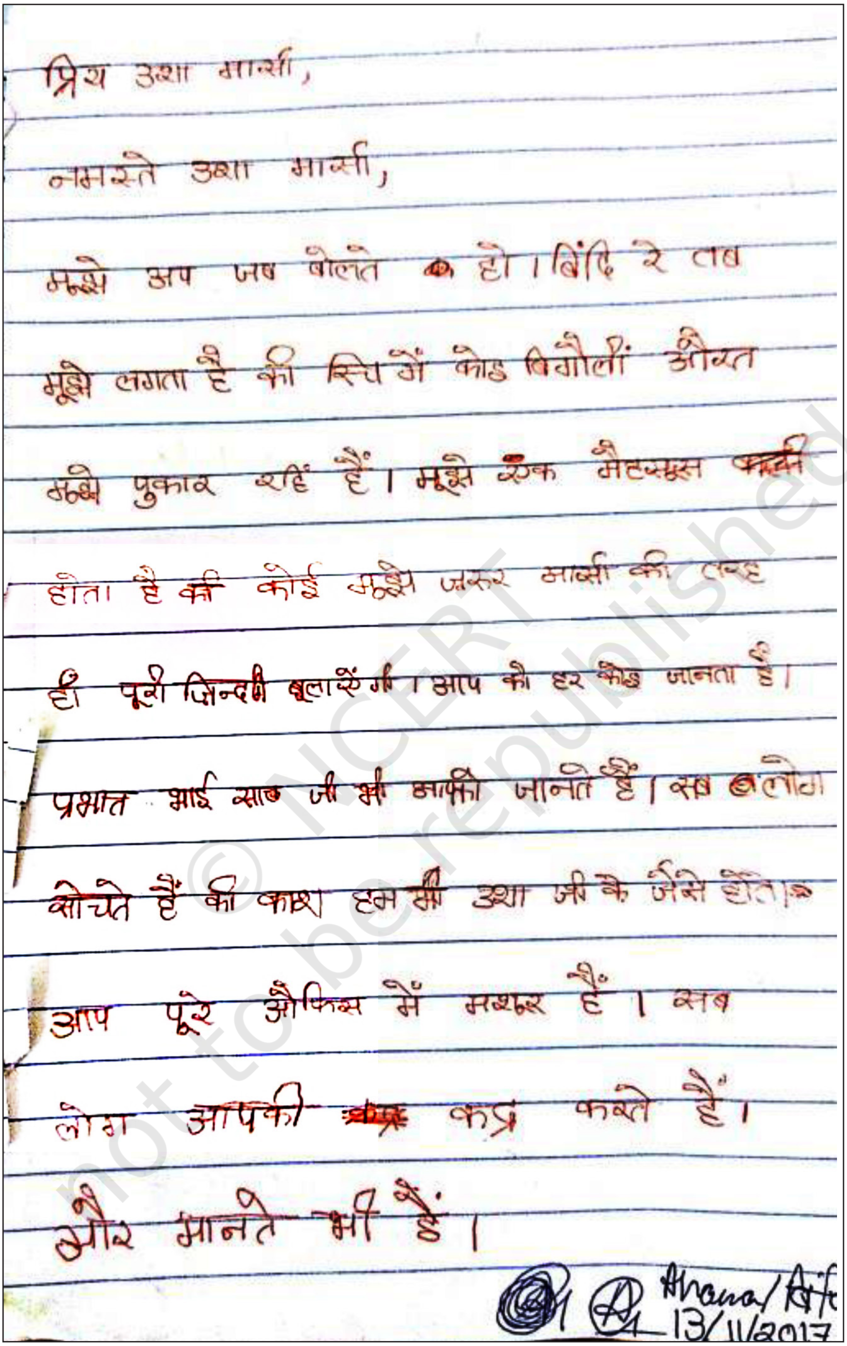
प्रिय उषा मार्सी,

नमस्ते उषा मार्सी,

मुझे आप जब बोलते हो। बिंदि रे तब
मुझे लगता है की स्टि में कोइ बिलौनी औरत
मुझे पुकार रहीं हैं। मुझे एक मैहसूस
होता है की कोई मुझे जरूर मार्सी की तरह
हो पूरी जिन्दगी भूलाएँगी। आप को हर कोइ जानता है।
प्रभात भाई साब जी भी काफी जानते हैं। सब लोग
सोचते हैं की काश हम भी उषा जी के जैसे होते।
आप पूरे ऑफिस में मशहूर हैं। सब
लोग आपकी कद्र करते हैं।
और मानते भी हैं।

Ahana/Arif
13/11/2017

अहाना का लेखन

© NCERT not to be republished

सीख जाते हैं। बस हमें बच्चों को पढ़ने-लिखने के अधिक से अधिक मौके देने होंगे। 'मूझे लगता है की स्चि में कोइ बिगौलीं औरत मूझे पुकार रहिं हैं। मूझे एक मैहसूस होता है की कोई मूझे ज़रुर मासी की तरह ही पूरी जिन्दगी बूलाएँगी।' अहाना के इस लेखन में उसके मन की बात में सबसे खास बात यही है कि वह 'महसूस' कर सकती है। भले ही वह महसूस को वैसा ही लिखे जैसे वह बोलती है (मैहसूस), हम भी वैसा ही बोलते हैं। एक और खास बात यह कि वह अनुस्वार या शब्दों में ऊपर लगाई जाने वाली बिंदी से अच्छे से परिचित है। उसे मालूम है कि अपने से बड़ों के लिए सम्मान रूप में 'रहीं, हैं, बुलाएँगी' जैसे शब्द लिखे जाते हैं, भले ही अहाना ने अनुस्वार या बिंदी का इस्तेमाल एक-दो जगह ठीक न किया हो लेकिन लगभग पूरी चिट्ठी में उसका यह प्रयोग ठीक है। मेरी तरह आपको भी उसकी चिट्ठी में यह हिस्सा सबसे ज़्यादा पसंद आया होगा। कम-से-कम 'मूझे लगता है की', 'मूझे एक मैहसूस होता है की', 'मासी की तरह ही पूरी ज़िंदगी' जैसे भाषा-प्रयोग तीसरी कक्षा में पढ़ने वाले आम बच्चे के लिए सहज नहीं हैं। अहाना को जिस तरह का पढ़ने-लिखने का माहौल घर में मिला है यह उसका परिणाम है। इसका अर्थ यह है कि बच्चों को माहौल देने की ज़रूरत है, बाकी काम तो वे खुद ही कर लेंगे।

आस्तिक भी तीसरी क्लास में पढ़ता है। वह बहुत अच्छा गाता भी है और नाचता भी है। वह एक बार कोई गाना सुन ले या एक बार वह कोई नृत्य देख ले—हू-ब-हू कॉपी करके वह गा-नाच सकता है। सबसे खास बात यह कि वह उसी अंदाज़ में गाता और नाचता है जिस अंदाज़ में वह गाया गया था, जिस अंदाज़ में नृत्य किया गया था। अगर अभ्यास अधिक हो जाए तो वह अपना अंदाज़ अपनाता है और मूल से अलग सृजनात्मक प्रदर्शन करता है। आस्तिक को भी तस्वीर बनाना बहुत पसंद है। उसकी ज़्यादातर तस्वीरों में आपको 'माँ', 'दुर्गा माँ' ही नज़र आएँगी। वह उन्हें बहुत अलग-अलग तरीकों से सजाता है। लेकिन वास्तव में उसे जो भी अपने आस-पास दिखाई देता है, वह उसका भी बखूबी

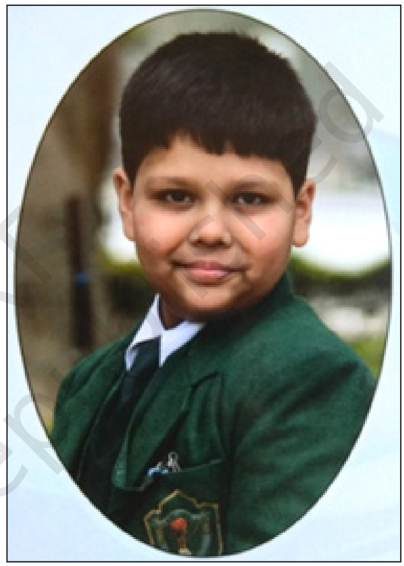

आस्तिक

चित्रांकन करता है। यह आदत अकसर बच्चों में होती है। अगर वे हू-ब-हू वैसा नहीं भी बना सकें और कोई उनसे पूछे कि यह क्या बनाया है तो वे ठीक-ठीक बता देंगे कि क्या बनाया है। आस्तिक के चित्रांकन में एक खास बात है और वह यह कि आस-पास का माहौल बदलते ही उसकी अवधारणाओं में भी बदलाव आता है। परिवेश, चिंतन और भाषा तीनों परस्पर जुड़े हुए हैं।

इसके अलावा आस्तिक को लिखना भी पसंद है। बॉलीवुड एक्ट्रेस श्रीदेवी के देहांत पर आस्तिक ने

आस्तिक का चित्रांकन दुर्गा माँ

उनके बारे में कुछ ऐसी कविता लिखी और शीर्षक भी दिया—'श्रीदेवी का अंतिम दिन'। साथ ही अपना नाम भी लिखा। अकसर ऐसा होता है कि किसी किताब को पढ़ते समय हम अगर उसके शीर्षक, लेखक, चित्र बनाने वाले के नाम पर भी ध्यान देते हैं और उसे अपने पढ़ने का हिस्सा बनाते हैं तो लिखते समय भी हम उन चीज़ों पर अपने आप ही ध्यान देते हैं।

ठीक ऐसे ही जो बच्चे कहानी या कविता के शीर्षक को भी पढ़ते हैं या उस पर ध्यान देते हैं, वे बच्चे लिखते समय भी शीर्षक, लेखक आदि पर पूरा-पूरा ध्यान देते हैं। आस्तिक की कविता को ध्यान से देखने पर यह साफ़ नज़र आएगा कि उसने श्रीदेवी की फ़िल्मों के ही गीतों की पंक्तियों को लेकर रचना की है। 'चाँदनी' जैसी बहुत प्रसिद्ध फ़िल्म का इस्तेमाल किया है। उन्हीं की एक और बहुत प्रसिद्ध फिल्म के गाने की पंक्तियों को इस तरह से इस्तेमाल किया है—'काँटे नहीं कट पाते दिन या रात'।

अब आप सोच सकते हैं कि इसमें क्या खास है? खास है श्रीदेवी की प्रसिद्ध फ़िल्में और गानों की जानकारी को इस तरह से इस्तेमाल करना। फिर उनमें

अपनी ओर से तुकबंदी करते हुए अपनी पंक्तियों को जोड़ना, जैसे—'काँटे नहीं कट पाते दिन या रात, तो मन में उदासी का निवास'। अंतिम पंक्ति भी बेहद खास है और अन्य फ़िल्मी गीतों से प्रभावित! अगर हम आस्तिक के शब्दों का चयन देखें तो वह कमाल का है और अहाना की तरह किसी वयस्क या बड़े व्यक्ति की तरह है। शब्दों की वर्तनी/स्पेलिंग भी बहुत सही है। आस्तिक की कविता में उसके व्यक्तित्व की एक झलक तो यह मिलती है कि वह सिनेमा-प्रेमी है। फ़िल्म, फ़िल्मी गीत और नृत्य से उसका बहुत गहरा लगाव है, वे उसे बहुत प्रिय हैं। और पिछली बात की तरह वही बात, आस्तिक की कविता में जो कल्पना है वह भी किसी स्कूल में नहीं सिखाई जाती। मुझे लगता है कि चिट्ठी, कहानी, कविता आदि लिखने के

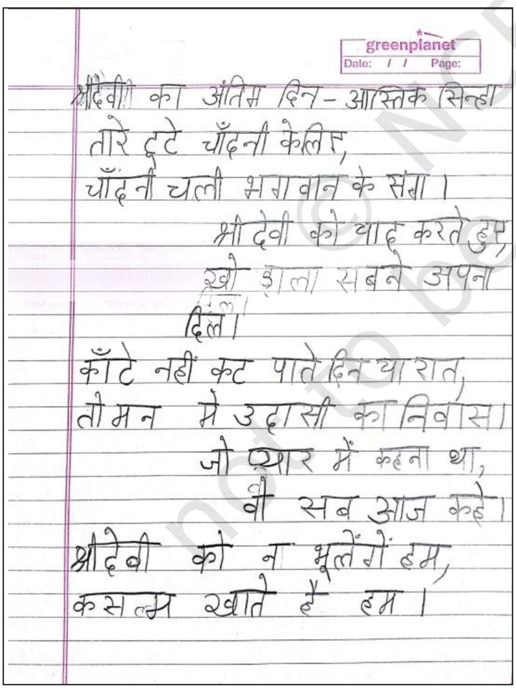
greenplanet
Date: / / Page:

श्रीदेवी का अंतिम दिन – आस्तिक सिन्हा
तारे टूटे चाँदनी के लिए,
चाँदनी चली भगवान के संग।
श्री देवी को याद करते हुए,
खो डाला सबने अपना दिल।
काँटे नहीं कट पाते दिन या रात,
तो मन में उदासी का निवास।
जो प्यार में कहना था,
वो सब आज कहे।
श्रीदेवी को न भूलेंगे हम,
कसम खाते हैं हम।

आस्तिक का लेखन

लिए सबसे पहले लिखने की इच्छा का होना ज़रूरी है। दूसरी बात यह समझ आती है कि सृजनात्मक लेखन या *क्रिएटिव राइटिंग* एक तरह का *एटीट्यूड* है, एक तरह का *पैशन* है और यह उन लोगों में देखा जा सकता है जो लिखे बिना रह नहीं सकते। हाथ में रंग, पेन या पेंसिल आने की देर है, वे कागज़ पर कुछ न कुछ बनाना या लिखना शुरू कर देते हैं। यह सृजनात्मक लेखन तभी संभव है जब बच्चों को वैसा लिखने का माहौल दिया जाए, उन्हें लिखने के लिए प्रोत्साहित किया जाए।

अंतिम बात! अक्तूबर में मैंने भी स्कूल छोड़ दिया, वही लक्ष्मी वाला स्कूल, क्योंकि तीन महीने पूरे हो गए थे। कुछ दिन बाद मैं शनिवार को उसी स्कूल में गई, बच्चों से मिलने! पता चला कि मेरे जाने के बाद उन्हें कोई नयी टीचर नहीं मिली तो क्लास के सारे बच्चों को पहली क्लास के अलग-अलग सेक्शंस में बैठा दिया गया। पूरी क्लास एक-दूसरे से अलग हो गई। यह मेरे लिए बेहद दुखद था, उससे भी दुखद जब मुझे स्कूल आना बंद करना था। लगा कि मेरे ही साथी मुझसे अलग हो गए! ये तो बहुत छोटे बच्चे हैं, एक-दूसरे के बिना कैसे रह पाएँगे? कैसे मन लगेगा इनका क्लास में? जब मन ही नहीं लगेगा तो पढ़ेंगे कैसे? कैसी अजीब दुनिया होती है बच्चों की, आप भले ही किसी एक-दो के साथ ही बहुत गाढ़ी दोस्ती रखो लेकिन फिर भी क्लास में सारे बच्चे अपनी नज़र के सामने चाहिए होते हैं। लक्ष्मी को सबसे ज़्यादा चाहिए थी, ज्योति जो उसकी सबसे 'गाढ़ी' दोस्त थी और उसके बाद इकरार, खुशबू, काजल, गुनगुन...! लक्ष्मी के

© NCERT not to be republished

सेक्शन में ज्योति नहीं थी और ज्योति के सेक्शन में लक्ष्मी! खैर, मैं मन कड़ा करके पहली क्लास के एक सेक्शन में गई। बच्चों से मुलाकात हुई। वे उदास से लग रहे थे। लक्ष्मी सहित सभी बच्चों की हँसी न जाने कहाँ चली गई थी! मेरी नज़र ब्लैकबोर्ड पर

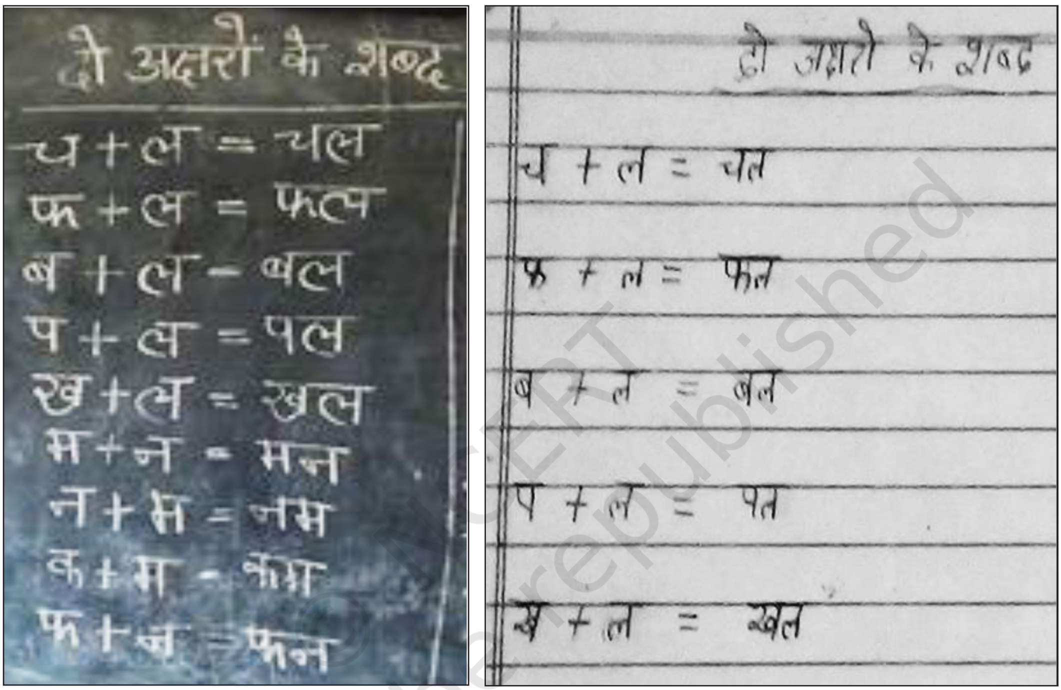

ब्लैकबोर्ड और बच्चों का लेखन

गई। वहाँ जो लिखा हुआ था उसे देखकर बहुत दुख हुआ कि पहली क्लास के बच्चे क्या लिख लेते हैं और टीचर क्या लिखवा रही है। आप खुद ही देख लीजिए! यह लिखवाना बच्चों के पढ़ना-लिखना सिखाने के दृष्टिकोण/नज़रिए से भी ठीक नहीं है और न ही उनकी भाषा सीखने की क्षमताओं के नज़रिए से! यह मुझे बच्चों की क्षमताओं का अपमान-सा लगा!

किसी भी कक्षा में इस तरह का लेखन या लेखन का इस तरह का शिक्षण यह बताता है कि शिक्षक की पढ़ने-लिखने संबंधी समझ कितनी 'गलत' और 'संकीर्ण' है। लेखन यांत्रिक कौशल नहीं है, वह एक सृजनात्मक कुशलता है जिसमें चिंतन-प्रक्रिया भी लगातार शामिल रहती है। अब आप स्वयं ही सोचिए कि बच्चे ऐसा कहाँ बोलते हैं और अगर पढ़ने-लिखने की प्रक्रिया भी यूँ हिज्जो में चलेगी तो बच्चों के लिए हम कठिनाई ही पैदा कर रहे हैं। इसका सबसे बड़ा कारण यह है कि इस तरह के लेखन में 'अर्थ' है ही नहीं और हम बार-बार इस बात पर बल देते हैं कि भाषा सीखने-सिखाने की प्रक्रिया में 'अर्थ' ही केंद्र में होता है और होना चाहिए। बच्चे के आप-पास मौजूद

© NCERT not to be republished

'प्रिंट' बच्चों को लेखन में मदद करता है। बच्चे पूरे-पूरे शब्द या वाक्य भी लिखने की क्षमता रखते हैं, बशर्ते हम उन्हें वे अवसर उपलब्ध कराएँ।

हाँ, स्कूल छोड़ते समय मैं सभी बच्चों को कहानियों और कविताओं की किताबें, रंग, पेंसिल, रबड़, पेपर आदि सभी कुछ दे गई थी। आखिर यह सारा सामान उन्हीं के लिए था। लक्ष्मी को खास तौर पर दो पेंसिलें दी थीं, क्योंकि उसकी छोटी पेंसिल मैंने उससे माँग ली थी तो उसके बदले एक पेंसिल तो देनी ही थी और दूसरी वह पेंसिल थी जो क्लास के बाकी बच्चों को भी मिली थी। बच्चों से मुलाकात करके वापस जाते समय मन बहुत उदास था! बच्चों का मन कितना कोमल होता है, इतने छोटे-छोटे बच्चे अपनी-अपनी जिंदगी में न जाने क्या-क्या देखते हैं, क्या-क्या झेलते हैं? मैं उनकी जगह खुद को रखकर सोच रही थी! शायद वे बच्चे मुझे भूल गए होंगे लेकिन मेरे सपनों में वे बच्चे आज भी जब-तब आ जाते हैं! आखिर उनसे रिश्ता ही ऐसा है।

लक्ष्मी उसी पेंसिल से ही लिख रही थी! उसकी कॉपी में भी बाकी बच्चों की तरह वही लिखा था जो मैडम ने बोर्ड पर से देखकर लिखने को कहा था। लेकिन लक्ष्मी की कॉपी में झोपड़ी नहीं मिली! न जाने कहाँ खो गई लक्ष्मी की झोपड़ी! और उस झोपड़ी के साथ उसका बचपन भी, उसकी हँसी भी और उसके जवाब, तर्क और उसकी खिलखिलाहट!

बच्चों का लेखन उनकी भाषाई क्षमताओं का प्रमाण है। वे बहुत कुछ कहना चाहते हैं। उन्हें इस बात का संज्ञान है कि जो कहा जाता उसे लिखा जा सकता है। लिखने में भी बच्चे कहीं यह अंतर नहीं करते कि पहले बिना मात्रा वाले शब्द, फिर मात्रा शब्द बोलेंगे और लिखेंगे। बच्चे पढ़ते समय भी सबसे पहले चित्रों पर गौर करते हैं और फिर लिखित सामग्री पर। वर्ण किसी अर्थ को प्रेषित नहीं करते इसलिए किसी सार्थक सामग्री से ही शुरुआत की जानी चाहिए। 'बल, खल, पल आदि शब्दों में न तो कोई अर्थ है और न ही पढ़ने-लिखने के प्रति कोई रुचि। यह समझना होगा कि शब्द लिखने और बात लिखने में गहरा अंतर होता है। बच्चे 'बात' लिखना चाहते हैं। बच्चों के लेखन पर अपनी प्रतिक्रिया भी दी जानी चाहिए। प्रतिक्रिया गुणात्मक हो तो और भी बेहतर!

© NCERT not to be republished